ख़लिश

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

न्यूयार्क में अच्छे खानों की कोई कमी नहीं। इन्डियन, पाकिस्तानी, चाइनीज़ जो चाहे खायें। एक से एक अच्छे होटल या फिर दोस्त अहबाब के घर दावतें। अपने घर में बिरयानी कबाब वगैरा का माहौल ज़रा कम था। वजह ये थी कि मेरी बीवी जूली को न तो उन चीज़ों से रक़बत थी और न ही उसे पकाना आता था। बहुत जी चाहा तो होटल से आर्डर कर दिया।

मैं जूली से उस वक़्त मिला जब वह किसी Advertizement कम्पनी की तरफ से मुझ से मिलने आई थी। मेरे कम्पनी के साफ़्टवेयर बेचने के लिये उसने जो स्लोगन बनाये थे वह मुझे बिल्कुल नहीं पसंद आये लेकिन उस के बरअक्स जूली मुझे बहुत अच्छी लगी थी हिन्दुस्तान के बारे में उस की अच्छी मालूमात थी। हिन्दुस्तान के नवाब राजा महाराजा या फिर जंगल में घूमते हुये साधू के बारे उस ने खूब पढ़ रखा था। शादी के बाद एक दिन में ने उससे पूछ ही लिया कि आखिर उसे मुझ में क्या नज़र आया। राजा महाराजा या नवाब और ये जानकर मुझे बहुत अफसोस हुआ जब उस ने बताया कि मुझे देख कर उसे अक्सर हिन्दुस्तानी साधुवों का ख़्याल आया। देखिये बात कहाँ से कहाँ निकल गई बात हो रही थी हिन्दुस्तानी खानों के लिये मेरे चटोरेपन की अब जूली मुझे बिरयानी या कबाब पका कर नहीं खिला सकती।

अब जब मैं लखनऊ छुट्टियों में आया तो सारा ध्यान ख़ानों पर था। ख़ास तौर से अच्छे ज़ायक़ेदार सीक कबाब मुझे बहुत अच्छे लग रहे थे। मैं ने अम्मी से पूछा ये कबाब पकते तो नहीं नज़र आते। कहाँ से सीधे ख़ाने की मेज़ पर आ जाते हैं। मुझे मालूम था मेरी वजह से कोई चीज़ होटल से भी नहीं आती थी। अम्मी ने जवाब दिया अरे बेटा ये कबाब तो कुलसूम बनाती हैं यहीं महल्ले में रहती हैं और अपने घर पर ही कबाब बनाकर बेचती है। हम लोग उन्हीं से खरीदते हैं। बाहर के कबाब ये सुनना था कि मैं घबरा गया। फूड पोयसनिंग और इस तरह के दूसरे ख़यालात मेरे दिल में आने लगे। बाहर का ख़ाना खाकर एक बार मेरी तबीअत बहुत ख़राब हो चुकी थी। बहर हाल उस के बाद कुलसूम से कबाब खरीदना मना कर दिया गया। देखते देखते एक महीना गुज़र गया मेरी छुट्टिया ख़त्म हो गईं। और आज मुझे न्यूयार्क वापस जाना था। मैं अपने कुछ दोस्तों से मिलकर जब घर में दाखिल हुआ तो देखा घर के आंगन में अम्मी किसी ख़ातून के साथ बैठी हुई हैं उन ख़ातून के चेहरे पर कुछ शराफत ऐसी झलक रही थी कि मेरा हाथ बेएख़्तियार सलाम के लिये उठ गयें। उन्होंने भी हलकी सी मुसकुराहट के साथ मेरे सलाम का जवाद दिया था। फिर मैं अन्दर के कमरे में आ गया। थोड़ी देर में ख़ातून चली गईं। और अम्मी भी अन्दर आ गई। अम्मी ये कौन ख़ातून थीं। बेटा ये कुलसूम थी जिस से हम कबाब खरीदते थे। बहुत खुद्दार ख़ातून हैं। उन के शौहर एक स्कूल में टीचर थे उनका एक हादसे में इन्तिक़ाल हो गया उस के बाद कोई ज़रिया आमदनी नहीं तो उस ने अपने घर में कबाब वगैरा का काम शुरू कर दिया। लेकिन उस में भी घर

घर चलाना मुश्किल हो रहा था। इस लिये ये अब बनारस अपनी बेटी के साथ वापस जा रही हैं। वहाँ उनके कुछ रिश्तेदार हैं। स्कूल की फीस न जमा करने के सबब से बेटी का दाखला भी ख़त्म हो गया। ख़ानदानी औरत है किसी की मदद भी नहीं कुबूल करती कि जब कबाब नहीं ख़रीदे तो पैसे किस बात के।

मैं एयर पोर्ट के लिये रवाना हो गया था। पूरा ख़ानदान मुझे छोड़ने आया था। मैं न्यूयार्क पहुँच गया और फिर अपने काम में मसरूफ़ हो गया। जूली भी मुझे छोड़ कर चली गई थी। ऐसी शादियाँ बहुत कम कामियाब हुई हैं। मुझे रह रह कर कुलसूम का ख़्याल आता था कि किसी तरह जद्दो जहद करके वह अपने अपनी बेटी को पाल रही थी और उसे पढ़ा भी रही थी और बजाय कुछ उसकी मदद करने के उस का और नुक़सान करा दिया नतीजा उसकी बेटी का नाम स्कूल से काट दिया गया।

इस वाक़ये को बहुत साल हो गये मेरा बिज़नेस भी काफी तरक़्की कर रहा था। ज़ाहिद मेरे काम में मेरी बहुत मदद करता था। उसने कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की थी और पिछले 3 साल से मेरी कम्पनी में साफ़्टवेयर इंजीनियर था और उस ने कम्पनी के लिये बहुत कुछ किया था उस की कम्पनी को ज्वाइन करने से कम्पनी को बहुत फायदा हुआ था। उस की शादी भी 3 साल पहले हुई थी। उस ने बताया था उस की बीवी उस के लिये बहुत खुशकिस्मत साबित हुई थी। शादी करके अमेरीका वापस आया तो उसे मेरी कम्पनी में फौरन नौकरी मिल गई। आज ज़ाहिद ने आफिस से छुट्टी ली थी वजह ये थी कि आज उसे अपनी बीवी को लेने एयर पोर्ट जाना था। आज वह पहली बार हिन्दुस्तान से आ रही थी।

मैं ने ज़ाहिद और उसकी बीवी को शाम को ख़ाने पर बुलाया था। ज़ाहिर है सारा ख़ाना होटल से आना था। ज़ाहिद की बीवी ने मुझे बहुत मुतास्सिर किया एक अच्छी मशरिकी लड़की। मैं ने ज़ाहिद की पसंद की दिल ही दिल में तारीफ़ की। कुछ दिनों के बाद ज़ाहिद के घर दावत थी। ज़ाहिद की बीवी ने जिस तरह से खाने बनाये थे उस में सीक कबाब भी था और उस के ख़ाते ही मेरे मुह से बेएख़तियार निकल गया। बेटा तुम कुलसूम की बेटी तो नहीं हो ज़ाहिद की बीवी मुझे फटी फटी आखों से देखने लगी। जी हा अंकल लेकिन आप उन्हें कैसे जानते हैं। और बेएख़तियार मेरे हाथ अल्लाह तआला के शुक्र में उठ गये। उन माँ बेटी का जिन का मुस्तक़बिल मेरे नज़दीक में सिर्फ अंधेरा था उस लड़की को मैं बहुत कामियाब कम्प्यूटर इंजीनियर की बीवी की शक्ल में देख रहा था। तुम्हारी अम्मी कहाँ हैं। सर वो भी चार महीने में हमारे पास रहने के लिये आ जायेंगी। उनके वीज़े वगैरा की फारमेल्टीज़ में लगा हुआ हूँ। अब ज़ाहिद ने जवाब दिया था। ज़ाहिद की बीवी अब मेरी तरफ़ सवालिया निगाहों से देख रही थी। कि मैं उस की अम्मी को कैसे जानता हूँ बेटी मेरा आबाई मकान लखनऊ में है। खान बहादुर सुलेमान मलिक मेरे वालिद थे। मेरी अम्मी पूरे महेल्ले में ख़ाला अम्मी के नाम से मशहूर थीं। आप लोग भी उस महेल्ले में रहते थे। फिर मुझे पता चला कि आप लोग बनारस चले गये उस के बाद मुझे आप लोगों के बारे में नहीं पता चला।

जी हम लोग बनारस आ गये थे। कुछ दिनों तो अपने रिश्तेदार के घर रहे फिर अम्मी मुझे लेकर किसी कालेज के प्रिन्सिपल से मिलने गई मेरे दाखिले के सिलसिले में उन प्रिन्सिपल साहब ने मेरा इन्टरव्यू लिया और मेरा दाखिला हो गया। प्रिन्सिपल साहब मेरे पढ़ाई के नतीजे से बहुत खुश थे। जब उन्हे हम लोगो की माली हालात का पता चला तो उन्होंने अम्मी को भी कालेज के प्राइमरी सेक्शन में नौकरी दे दी। उस के बाद के वाक़यात आप को ज़ाहिद बतायेंगे। ज़ाहिद की बीवी ने मुस्कुराकर ज़ाहिद की तरफ देखा था। जी ज़ाहिद खिखार कर बोला। कालेज के वो प्रिन्सिपल मेरे वालिद साहब थे, एक दिन वो बहुत खुश घर पर आये उन की कालेज की एक Student ने इंटरमिडियट के नतीजे में पूरे शहर में टाप किया था और उस लड़की से इतना मुतास्सिर थे कि उस को अपनी बहू बना लिया। जो इस वक़्त आप के सामने बैठी है।

ज़ाहिद के घर से मैं दावत ख़ाकर आ गया था। जल्द ही सोने लेट गया दूसरे दिन आफिस नहीं जाना था। बड़ी देर तक सोता रहा अच्छी नींद आई थी। सुबह उठा तो अजीब एक इतमिनान सा था। पिछले दस सालों से जो एक खलिश थी वह शायद दूर हो गई थी।

★★★